भूमिका

मैं एम.ए.हिन्दी की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद प्रत्यक्षत: कोई सार्थक प्रयत्न न करते हुए भी मैंने शोधकार्य करने की सोची इस सोच में जब भी मैं डूबती तब मुझे यही लगता युगजीवन की साँस को महसूस करनेवाला और अपने गंध से परिवेश को जोडनेवाला यदि कोई कलाकार हैं, तो वह अमृतलाल नागर हैं। नागर जी कितने पाठकों की संवेदना को स्पर्श करते हैं, यह बात किसीसे छिपी नहीं हैं। मैं मन-ही-मन में संकल्पनिष्ठ होकर उपन्यास साहित्य के विशेषज्ञ - डॉ.व्ही.के.मोरे जी से मिली अनेक प्रश्नोत्तरों के बाद शोध कार्य का विषय तय हुआ --

" अमृतलाल नागर के " बूँद और समुद्र " उपन्यास का अनुशीलन। "

कहना यह है कि अमृतलाल नागर के साहित्य की विविधता, समग्रता और प्रासंगिकता से प्रेरित प्रभावित और पुलकित होकर मैंने उक्त विषय पर शोध किया है और यह कृति उसीका प्रकाशित रुप है।

शोधकार्य के प्रारंभ में मेरे सम्मुख निम्नांकित प्रश्न थे --

१) क्या ' बूँद और समुद्र ' उपन्यास में मध्यमवर्गीय नागरिक जीवन का सफल चित्रण हुआ है ?

२) क्या ' बूँद और समुद्र " आँचलिक उपन्यास हैं ?

३) " बूँद और समुद्र " उपन्यास का उद्देश्य क्या हैं ?

इन प्रश्नों के उत्तर खोजते हुए ही यह अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इनके उत्तर उपसंहार में दिए हैं। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया है।

अध्ययन योजना --

प्रस्तुत प्रबंध की अध्ययन योजना इस प्रकार हैं।

प्रथम अध्याय -- के अंतर्गत अमृतलाल नागर के व्यक्तित्व को स्पष्ट किया है। एक सच्चे भारतीय लेखक का व्यक्तित्व हैं, एक ऐसी लगन हैं जो नई-नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर करता है।

द्वितीय अध्याय -- में अमृतलाल नागर के साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया है। उनकी ज्यादात्तर कहानियाँ हास्य-व्यंग्यप्रधान है। उपन्यासकार, कहानीकार, रेखाचित्रकार, संस्मरण कर्ता, नाट्य सर्जक और व्यंग्य लेखक भी है।

तृतीय अध्याय -- के अंतर्गत 'बूँद और समुद्र' उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन किया है। कथावस्तु की व्यापकता और जटिलता में यह शिथिलता कथा को चिन्तनप्रद रुप प्रदान करती हैं। लय और गति के साथ भरपूर रोचकता प्रदान करती है।

चतुर्थ अध्याय --' बूँद और समुद्र ' उपन्यास के पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है। उपन्यास में प्रत्येक पात्र कीअपनी भाषा अलग है। अपने-अपने बोली-वाणी और लहजें में बातें करतें है।

पंचम अध्याय --' बूँद और समुद्र ' उपन्यास में देशकाल वातावरण को स्पष्ट किया है। उन्होंने स्वातंत्र्योत्तरकालीन सामाजिक एवं राजनीतिक पृष्ठ - भूमिका का चित्रण कुशलतापूर्वक किया है।

षष्ठ अध्याय --' बूँद और समुद्र ' उपन्यास की भाषा-शैली का विवेचन किया है। भाषा प्रसादगुण से युक्त हैं। उसमें वक्रता, अर्थ भंगिमा और अभिव्यक्ति की पूर्ण क्षमता विद्यमान है। वर्णनात्मक शैली को आधार बनाया हैं।

सप्तम अध्याय -- ' बूँद और समुद्र ' उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट किया है। वैयक्तिक राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है।

यह शोध-कार्य व्ही.के.घाटे के निर्देशन में लिखा गया था। उनके स्नेहित और विद्वत्तापूर्ण निर्देशन के द्वारा ही यह शोध कार्य संपन्न हुआ हैं। इसके प्रकाशन के अवसर पर मैं आदरणीय डॉ.घाटे की आत्मीयता और प्रतिभा के समक्ष श्रध्दावनत हूँ। मैं डॉ.मोरे जी और डॉ.अर्जुन चव्हाण जी के प्रति हृदय से आभारी हूँ जिनकी शुभ चिंताओं के कारण ही यह कृति प्रकाश में आ रही हैं।

प्रकाशक बालकृष्ण सावंत के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने इतने कम समय में इतनी कुशलता और लगन से इसका प्रकाशन किया है। कुछ प्रेरणाएँ ऐसी भी होती है जो अनाम रहकर भी दीपक की के समान चिरंतन प्रकाश फैलाती रहती है, उन्हें मेरा स्नेहिल मधुर आभार।

(कु.सुनिता दयानंद तळाशीकर)

स्थल : कोल्हापुर।
दिनांक : : :१९९४।

Reader and Head
Department of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur - 416004